Sample / Sample Girl

गुण मिलान

Ajit Kumar Singh

Contact - ----------

* While all precautions have been taken for the accuracy of the astrological calculations, the maker of these horoscopes makes no warranties, either expressed or implied.

ज्योतिष सारिणी

	Sample	Sample Girl
जन्म दिन :	18 दिसम्बर 1973 (मंगलवार)	11 नवम्बर 1978 (शनिवार)
ज्योतिषिय वार :	सोमवार	शनिवार
जन्म समय:	01:45:00AM	11:32:00AM
जन्म स्थान :	Ballia , INDIA	New Delhi , INDIA
रेखांश :	084:10:00E	077:12:00E
अक्षांश :	025:45:00N	028:36:00N
समयक्षेत्र :	-05:30:00 hrs	-05:30:00 hrs
समय संशोधन :	00:00:00 hrs	00:00:00 hrs
जी. एम. टी. समय:	20:15:00 hrs	06:02:00 hrs
स्थानीय समय संस्कार :	00:06:40 hrs	-00:21:12 hrs
स्थानीय समय:	01:51:40 hrs	11:10:48 hrs
इष्टकाल :	47: 52: 16 घटी	13: 23: 37 घटी

लग्न :	कन्या	धनु
लग्नाधिपति :	बुध	गुरू
राशि (चन्द्रमा) :	कन्या	मीन
राशिपति :	बुध	गुरू
नक्षत्र :	हस्त	उत्तराभाद्रपद
नक्षत्रपति :	चन्द्रमा	शनि
नक्षत्र चरण :	2	3
पाया :	स्वर्ण	लौह
ऋतु :	हेमन्त	शरद
मास :	पौष	कार्तिक
पक्ष :	कृष्ण	शुक्ल
तिथि :	नवमी	द्वादशी
तिथि श्रेणी :	रिक्ता	भद्रा
तिथि पति :	सूर्य	बुध
करण :	गरिज	बव
करण श्रेणी :	चर	चर
करणपति :	वासुदेव	विष्णु
सूर्य सिद्धान्त योग :	सौभाग्य	हर्षण
तत्व :	अग्नि	आकाश
तत्वाधिपति :	मंगल	गुरू
विहग :	वायस	मयुर
वेध :	शतभिषा	पूर्वाफाल्गुनी
आद्याक्षर :	ष, षि, षु, षे, षो	झ, झि, झु, झे, झो

ग्रह स्थिति

Sample					Sample Girl				
ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र		ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	
लग्न	कन्या	28:15:29	चित्रा (2)	–	लग्न	धनु	29:58:50	उ.षा. (1)	–
सूर्य	धनु	02:15:49	मूला (1)	मित्र राशि	सूर्य	तुला	24:55:56	विशा. (2)	नीच राशि
चन्द्रमा	कन्या	16:00:57	हस्ता (2)	स्व नक्षत्र	चन्द्रमा	मीन	10:53:48	उ.भा. (3)	सम राशि
मंगल	मेष	04:42:18	अश्वि. (2)	स्व राशि	मंगल	वृश्चिक	13:04:55	अनु. (3)	स्व राशि
बुध अ.	वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा (1)	स्व नक्षत्र	बुध	वृश्चिक	16:48:16	ज्येष्ठा (1)	स्व नक्षत्र
गुरू	मकर	17:56:39	श्रव. (3)	नीच राशि	गुरू	कर्क	15:09:03	पुष्य (4)	उच्च राशि
शुक्र	मकर	13:00:16	श्रव. (1)	मित्र राशि	शुक्र व.अ.	तुला	19:32:35	स्वा. (4)	स्व राशि
शनि व.	मिथुन	08:12:33	अरि. (1)	मित्र राशि	शनि	सिंह	18:41:18	पू.फा. (2)	शत्रु राशि
राहु व.	धनु	05:10:35	मूला (2)	सम राशि	राहु व.	कन्या	00:21:07	उ.फा. (2)	मित्र राशि
केतु व.	मिथुन	05:10:35	मृग. (4)	सम राशि	केतु व.	मीन	00:21:07	पू.भा. (4)	सम राशि
हर्षल	तुला	03:20:59	चित्रा (4)	सम राशि	हर्षल अ.	तुला	23:16:11	विशा. (1)	सम राशि
नेपच्यून	वृश्चिक	14:20:41	अनु. (4)	सम राशि	नेपच्यून	वृश्चिक	23:24:22	ज्येष्ठा (3)	सम राशि
प्लूटो	कन्या	13:11:14	हस्ता (1)	सम राशि	प्लूटो	कन्या	24:15:27	चित्रा (1)	सम राशि

Sample

लग्न कुण्डली

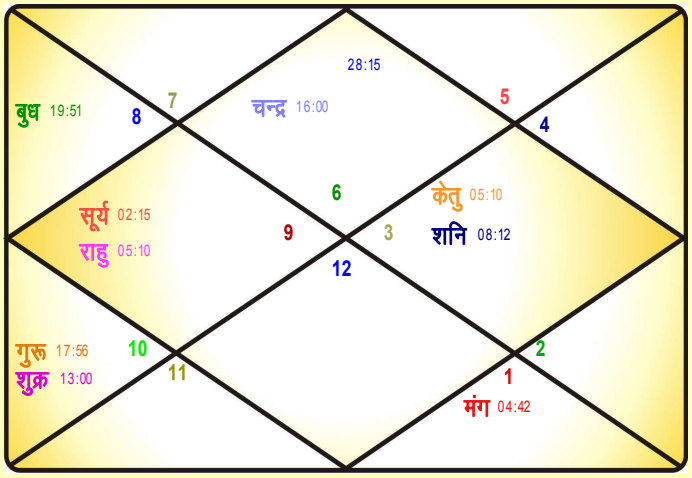

नवांश कुण्डली

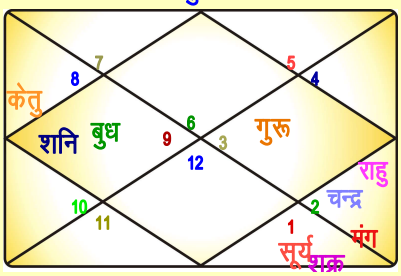

चन्द्र कुण्डली

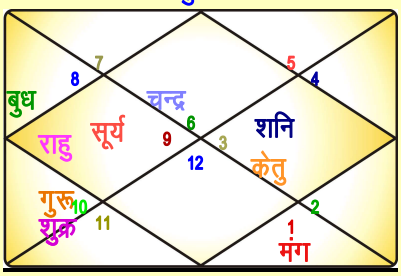

नवांश कुण्डली

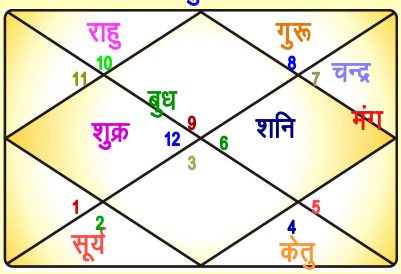

चन्द्र कुण्डली

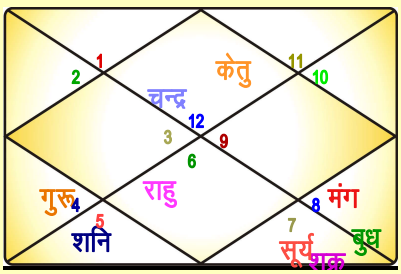

Sample Girl

लग्न कुण्डली

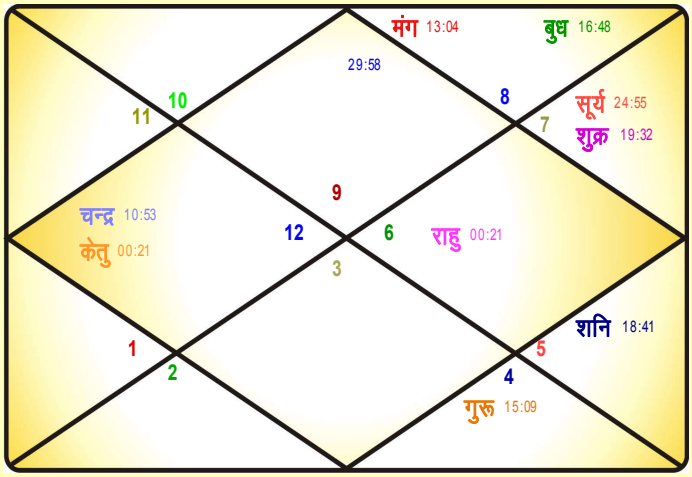

विवाह मेलापक सारिणी
(अष्टकूट सिद्धान्त के अनुसार)

क0स0	विवरण	Sample	Sample	पूर्णांक	प्राप्ताकं	अभिप्राय
1	वर्ण कूट	वैश्य	विप्र	1	0	दैविय विकास
2	वश्य कूट	द्विपद	जलचर	2	0.5	प्राकृतिक सामजंस्य
3	तारा कूट	साधक	प्रत्यरी	3	1.5	सम्बन्ध का स्थायित्व
4	योनि कूट	महिष (स्त्री)	गौ (स्त्री)	4	3	प्रत्यक्ष गुण
5	ग्रह–मैत्री कूट	बुध	गुरू	5	0.5	मानसिक प्रकृति
6	गण कूट	देव	मनुष्य	6	6	विवाह सम्बन्धि अनुरूपता
7	राशि कूट	कन्या	मीन	7	7	आपसी तालमेल
8	नाड़ी कूट	आदि	मध्य	8	8	मानसिक मानक
योग				36	26.5	73.6%

दाम्पत्य सम्बन्धित अन्य विचार

क0स0	विवरण	परिणाम
1	नाड़ी–पद कूट	चुकि नाड़ी कूट समझौता भावी दम्पति के कुण्डलियों में उपस्थित है, इसलिए नाड़ी–पद समझौता पर ध्यान देना जरूरी नही है।
2	महेन्द्र कूट	भावी दम्पति के कुण्डलियों में महेन्द्र कूट समझौता उपस्थित नही है।
3	स्त्री दीर्घ कूट	भावी दम्पति के कुण्डलियों मे स्त्रीदीर्घ कूट समझौता उपस्थित है। यह बहुत अच्छे वैवाहिक एकरूपता और विवाह सम्बन्धी अनुरूपता का सूचक है।
4	रज्जु कूट	भावी दम्पति के कुण्डलियों में रज्जु कूट समझौता उपस्थित है वे किसी भी परेशानी से मुक्त है और वे बहुत सारी खुशियॉ पायेगें ।
5	वेध कूट	चूकि वर और बधु के चन्द्रमा के नक्षत्र परस्पर वेध सम्बन्ध नही स्थापित करतें है, वे एक दूसरे को अच्छी तरह से समझेगें और किसी तरह का आपसी वैमनस्य होने की सभांवना कम ही है ।
6	समान जन्म राशि	वर और वधु के चन्द्रमा के राशि एक समान नही है, इसलिए समान जन्म राशि का प्रश्न ही नही है।
7	समान जन्म नक्षत्र	वर और वधु के नक्षत्र एक समान नही है।
8	समान जन्म नक्षत्र–पद	चूकि वर–वधु के चन्द्रमा का नक्षत्र एक समान नही है इसलिए नक्षत्र पद को देखने की जरूरत नहीं और इस विवाह की अनुमति है।

सुक्ष्मग्राही बिन्दु

Sample		Sample Girl	
बीज–स्फुट(१)	093:12:44	क्षेत्र–स्फुट(१)	309:07:47
बीज–स्फुट(२)	161:54:02	क्षेत्र–स्फुट(२)	188:17:08
बीज–स्फुट(३)	356:43:56	क्षेत्र–स्फुट(३)	066:30:01
शुभ लक्षण	52 %	शुभ लक्षण	40 %

For Mindsutra Software Technologies

विवाह मेलापक सारिणी

(द्वादशकूट सिद्धान्त के अनुसार)

क0स0	विवरण	पूर्णांक	प्राप्ताकं	अभिप्राय
1	दीन कूट	3	3	सम्बन्ध का स्थायित्व
2	गण कूट	6	6	मानसिक प्रकृति
3	योनि कूट	4	3	प्रत्यक्ष गुण
4	राशि कूट	7	7	आपसी तालमेल
5	ग्रह–मैत्री कूट	2	2	विवाह सम्बन्धि अनुरूपता
6	रज्जु कूट	7	7	वैवाहिक जीवन की समय सीमा
7	वेध कूट	3	3	मतभेद की संभावना
8	वश्य कूट	2	0.5	प्राकृतिक सामजंस्य
5	महेन्द्र कूट	4	0	उन्नति और समृद्धि
6	स्त्री दीर्घ कूट	3	3	पारस्परिक आकर्षण
7	नाड़ी कूट	8	8	मानसिक मानक
8	वर्ण कूट	1	0	दैविय विकास
योग		50	42.5	

सुक्ष्मग्राही बिन्दु

Sample		Sample Girl	
बीज–स्फुट(१)	093:12:44	क्षेत्र–स्फुट(१)	309:07:47
बीज–स्फुट(२)	161:54:02	क्षेत्र–स्फुट(२)	188:17:08
बीज–स्फुट(३)	356:43:56	क्षेत्र–स्फुट(३)	066:30:01
शुभ लक्षण	52 %	शुभ लक्षण	40 %

For Mindsutra Software Technologies

दोष साम्य

इस वर्ग में, संभावित युग्म की विचाराधीन दोनों कुण्डलियों में से प्रत्येक में, अलग – अलग अशुभ ग्रहों(मंगल, राहु, शनिश सूर्य और केतु) की संवेदनशील भावों में स्थिति के कारण दोष की सम्पूर्ण सीमा का निर्धारण होगा। अशुभ प्रभावों को मिलने वाली रेटिंग कुछ हद तक अनिश्चित हो सकती है, लेकिन दोनों कुण्डलियों में (लड़के और लड़की की) में अशुभ प्रभावों की गणना समान रेटिंग से की गयी है। दो कुण्डलियों के बीच तुलना करने के उद्देश्य के लिए, इसके संतोष जनकरूप से काम करने की आशा की जा सकती है। सैद्धान्तिक रूप से, लड़की कुण्डली में यदि दोष की कुल सीमा लड़के कुण्डली से कम है, तो वैवाहिक जीवन में खुशियों और विशेषकर उसकी एक लम्बी अवधि की आशा की जा सकती है।

सभी दोषों में, मंगल (जब किसी विशेष संवेदनशील स्थिति में हो) के दोषों को सबसे बुरा म ाना जाता है। यहाँ पर मांगलिक दोष(या कुज दोष) का अध्ययन अलग शिर्षक में किया जायेगा और यदि दोष उपस्थित है, तो इस दोष के निस्तारण के लिए मौजूद परिस्थितियों पर विचार किया जायेगा।

आगे यह बात ध्यान देने योग्य है, कि दोष – बिन्दुओं के संबंध में दो भिन्न विचार है, अतः चयनित विधि के अनुसार थोड़े भिन्न परिणाम प्राप्त हो सकते हैं।

उत्तर भारतीय पद्धति के अनुसार, दोष–बिन्दु हैं–लग्न, चौथाँ, सातवाँ, आठवाँ और बारहवाँ भाव। (इस विधि में, लग्न से दूसरे भाव को दोष बिन्दु नहीं माना जाता है।)

दक्षिण भारतीय पद्धति के अनुसार, दोष–बिन्दु हैं–दूसरा, चौथाँ, सातवाँ, आठवाँ और बारहवाँ भाव। (इस विधि में, लग्न को दोष बिन्दु नहीं माना जाता है।)

Sample					
पाप ग्रह		लग्न से	चन्द्रमा से	शुक्र से	योग
♂	मंगल	10.00	12.00	11.20	33.20
☊	राहु	07.00	08.40	08.40	23.80
♄	शनि	00.00	00.00	00.00	00.00
☉	सूर्य	05.00	06.00	05.60	16.60
☋	केतु	00.00	00.00	00.00	00.00

Sample Girl					
पाप ग्रह		लग्न से	चन्द्रमा से	शुक्र से	योग
♂	मंगल	07.00	00.00	00.00	07.00
☊	राहु	00.00	09.60	08.40	18.00
♄	शनि	00.00	00.00	00.00	00.00
☉	सूर्य	00.00	08.40	05.60	14.00
☋	केतु	04.00	03.60	00.00	07.60

लड़के कुण्डली में अशुभ प्रभावो का कुल योग 73.60 हैं और लड़की की कुण्डली में अशुभ प्रभावो का कुल योग 46.60 है। लड़के की कुण्डली में अशुभ प्रभावो का कुल योग लड़की की कुण्डली से अधिक है। सैद्धान्तिक रूप से, लड़की की कुण्डली में यदि दोष की कुल सीमा लड़के की कुण्डली से कम है, तो वैवाहिक जीवन में खुशियों और विशेषकर उसकी एक लम्बी अवधि की आशा की जा सकती है। हालाँकि, यदि अन्तर बड़ा है, तो कृपया इस बात पर विचार करें कि क्या लड़की का विवाह किसी अन्य ऐसे लड़के के साथ किया जा सकता है, जिसके साथ अन्तर बड़ा नहीं होगा।

सभी ग्रहों से अष्टकुट मिलान

लग्न से

कूट	Sample	Sample	सम्पू0	प्राप्त0
वर्ण	वैश्य	क्षत्रिय	1	0
वश्य	द्विपद	चतुश्पद	2	0.5
तारा	विपत	मित्र	3	1.5
योनि	ब्याघ्र (स्त्री)	नकुल (पु0)	4	2
ग्रह–मैत्री	बुध	गुरू	5	0.5
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0
राशि	कन्या	धनु	7	7
नाडी	मध्य	अन्त	8	8
योग			36	19.5

सूर्य से

कूट	Sample	Sample	सम्पू0	प्राप्त0
वर्ण	क्षत्रिय	शुद्र	1	1
वश्य	चतुश्पद	द्विपद	2	0.5
तारा	खेष्म	निधन	3	1.5
योनि	श्वान (पु0)	ब्याघ्र (पु0)	4	1
ग्रह–मैत्री	गुरू	शुक्र	5	0.5
गण	राक्षस	राक्षस	6	6
राशि	धनु	तुला	7	7
नाडी	आदि	अन्त	8	8
योग			36	25.5

चन्द्रमा से

कूट	Sample	Sample	सम्पू0	प्राप्त0
वर्ण	वैश्य	विप्र	1	0
वश्य	द्विपद	जलचर	2	0.5
तारा	साधक	प्रत्यरी	3	1.5
योनि	महिष (स्त्री)	गौ (स्त्री)	4	3
ग्रह–मैत्री	बुध	गुरू	5	0.5
गण	देव	मनुष्य	6	6
राशि	कन्या	मीन	7	7
नाडी	आदि	मध्य	8	8
योग			36	26.5

मंगल से

कूट	Sample	Sample	सम्पू0	प्राप्त0
वर्ण	क्षत्रिय	विप्र	1	0
वश्य	चतुश्पद	कीट	2	2
तारा	विपत	मित्र	3	1.5
योनि	अश्व (पु0)	मृग (स्त्री)	4	3
ग्रह–मैत्री	मंगल	मंगल	5	5
गण	देव	देव	6	6
राशि	मेष	वृश्चिक	7	0
नाडी	आदि	मध्य	8	8
योग			36	25.5

बुध से

कूट	Sample	Sample	सम्पू0	प्राप्त0
वर्ण	विप्र	विप्र	1	1
वश्य	कीट	कीट	2	2
तारा	जन्म	जन्म	3	3
योनि	मृग (पु0)	मृग (पु0)	4	4
ग्रह–मैत्री	मंगल	मंगल	5	5
गण	राक्षस	राक्षस	6	6
राशि	वृश्चिक	वृश्चिक	7	7
नाडी	आदि	आदि	8	0
योग			36	28

गुरू से

कूट	Sample	Sample	सम्पू0	प्राप्त0
वर्ण	वैश्य	विप्र	1	0
वश्य	जलचर	जलचर	2	2
तारा	साधक	प्रत्यरी	3	1.5
योनि	वानर (स्त्री)	मेष (पु0)	4	0
ग्रह–मैत्री	शनि	चन्द्रमा	5	0.5
गण	देव	देव	6	6
राशि	मकर	कर्क	7	7
नाडी	अन्त	मध्य	8	8
योग			36	25

शुक्र से

कूट	Sample	Sample	सम्पू0	प्राप्त0
वर्ण	वैश्य	शुद्र	1	1
वश्य	जलचर	द्विपद	2	0.5
तारा	मित्र	विपत	3	1.5
योनि	वानर (स्त्री)	महिष (पु0)	4	2
ग्रह–मैत्री	शनि	शुक्र	5	5
गण	देव	देव	6	6
राशि	मकर	तुला	7	7
नाडी	अन्त	अन्त	8	0
योग			36	23

शनि से

कूट	Sample	Sample	सम्पू0	प्राप्त0
वर्ण	शुद्र	क्षत्रिय	1	0
वश्य	द्विपद	चतुश्पद	2	0.5
तारा	प्रत्यरी	साधक	3	1.5
योनि	श्वान (स्त्री)	मूषक (स्त्री)	4	1
ग्रह–मैत्री	बुध	सूर्य	5	4
गण	मनुष्य	मनुष्य	6	6
राशि	मिथुन	सिहं	7	7
नाडी	आदि	मध्य	8	8
योग			36	28

राहु से

कूट	Sample	Sample	सम्पू0	प्राप्त0
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	1	1
वश्य	चतुश्पद	द्विपद	2	0.5
तारा	मित्र	विपत	3	1.5
योनि	श्वान (पु0)	गौ (पु0)	4	2
ग्रह–मैत्री	गुरू	बुध	5	0.5
गण	राक्षस	मनुष्य	6	0
राशि	धनु	कन्या	7	7
नाडी	आदि	आदि	8	0
योग			36	12.5

केतु से

कूट	Sample	Sample	सम्पू0	प्राप्त0
वर्ण	शुद्र	विप्र	1	0
वश्य	द्विपद	जलचर	2	0.5
तारा	मित्र	विपत	3	1.5
योनि	सर्प (स्त्री)	सिंह (पु0)	4	2
ग्रह–मैत्री	बुध	गुरू	5	0.5
गण	देव	मनुष्य	6	6
राशि	मिथुन	मीन	7	7
नाडी	मध्य	आदि	8	8
योग			36	25.5

For Mindsutra Software Technologies

घातक नक्षत्रों में जन्म का विवेचन

ज्योतिषानुसार 27 नक्षत्रों में से 4 नक्षत्रों अश्लेषा, विशाखा, ज्येष्ठा और मूल को विनाशकारी नक्षत्र माना गया है। सामान्यतः इनमें से प्रत्येक नक्षत्र कुछ प्रतिकूल प्रभाव देने वाला माना जाता है और जीवनसाथी सेसंबंधित किसी रिश्ते के स्वास्थ्य और सुख को प्रभावित करता है। यदि लड़की का चंद्रमा इन चार नक्षत्रोंमें से किसी एक नक्षत्र में स्थित है तो यह प्रतिकूल प्रभावकारी साबित हो सकता है। इसी प्रकार यदिलड़के का चंद्रमा इन चार नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र में स्थित है, तो भी प्रतिकूल प्रभाव उत्पन्न करसकता है। परन्तु इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि इन चारों नक्षत्र के चार चरणों में से केवलएक चरण में ही प्रतिकूल प्रभाव प्राप्त होता है, शेष अन्य तीन चरणों में नहीं होता है। अश्लेषा का प्रथम चरण, विशाखा का प्रथम चरण, ज्येष्ठा का प्रथम चरण और मूल का चौथा चरण अशुभ फलदायक माना जाता है। जबकि इन चारों नक्षत्र के अन्य तीन चरण अशुभ नहीं होते हैं (कम से कम विवाह विमर्श के सन्दर्भ में)।

वर और वधु दोनों की कुण्डली में, चन्द्रमा उपर दिए 4 नक्षत्रों (अश्लेषा, विशाखा, ज्येष्ठा और मूल) में नहीं है।

विहग, तत्व, वध–विनाशक और सम–गोत्र दोष का आकलन

चंद्रमा के नक्षत्र के विहग–वर्गीकरण के अनुसार वर की श्रेणी वायस है तथा कन्या का चंद्रमा नक्षत्र समानश्रेणी से संबंधित नहीं है। अतः विवाह के लिए यह अनुकूल योग नहीं है। क्योंकि ज्योतिषानुसार भिन्न विहग–श्रेणी वाले वर–कन्या की पसन्द–नापसन्द, इच्छाओं, अभिलाषाओं आदि में बहुत असमानताएं होती हैं। अतः वर व वधु की कुण्डलियों में इस संबंध में गुण मिलान विद्यमान नहीं है। (इस गुण मिलान का वर्णन सोमायाजी के प्राचीन शास्त्र 'जातकदेश मार्ग' में विहग–अनुकूल्य के रूप में किया गया है।)

चंद्रमा के नक्षत्र के तत्व–वर्गीकरण के अनुसार वर का संबंध अग्नि से है तथा कन्या का संबंध आकाश से है। अतः ऐसा योग विवाह के लिए अनुकूल है। क्योंकि ज्योतिषानुसार वर व कन्या की तत्व–श्रेणियों में परस्पर अनुरूपता होने पर वर व कन्या की आन्तरिक प्रकृति में भी बहुत समानताएं होगीं। अतः आप दोनों की कुण्डलियों में इस संबंध में गुण मिलान विद्यमान है।

वर व कन्या की जन्मकुण्डलियों में चंद्रमा की स्थिति की तुलना करने पर वर व कन्या के चंद्रमा का नक्षत्र एक दूसरे के चंद्रमा के नक्षत्र से गिनने पर बाइसवां नक्षत्र नहीं है। अतः आप दोनों की कुण्डलियों में वध–वैनाशिक दोष का प्रतिकूल योग विद्यमान नहीं है। इसलिए आप दोनों का गुण मिलान करने में इस संबंध में कोई बाधा नहीं है।

वर व वधु दोनों की जन्मकुण्डलियों का 28 नक्षत्र पद्धति (अभिजीत सहित) के अनुसार मिलान करने पर वरके चंद्रमा का नक्षत्र–गोत्र अत्री श्रेणी में आता है तथा वधु का नक्षत्र–गोत्र भी उसी श्रेणी में आता है। ज्योतिषानुसार यह दोनों एक ही श्रेणी से संबंधित होने के कारण अशुभ माना जाता है। अतः ऐसे मिलान को करने से बचना चाहिए, अन्यथा संतान का बौद्धिक स्तर और आध्यात्मिक रूझान उच्च कोटि का नहीं हो सकता है।

चार नक्षत्र– मृगशिरा (5), मघा (10), स्वाती (15) और अनुराधा (17) विशेष नक्षत्रों की श्रेणी में आते हैं। यदि वर या कन्या के चंद्रमा का नक्षत्र इनमें से कोई है तो मिलान स्वीकार किया जा सकता है। यद्यपि कूट मिलान का कुल जोड़ अनुकूलतप योग से कम हो। यह काल विधान, मुहुर्त पर एक लेख (चुनाव ज्योतिष) के अनुसार

है।

वर व वधु दोनों की जन्मकुण्डली में चंद्रमा का नक्षत्र चार विशेष नक्षत्रों (महा नक्षत्रों) – मृगशिरा, मघा, स्वाती व अनुराधा में से एक भी नहीं है। अतः इस आधार पर विवाह हेतु इस विशेष मामले में मिलान का प्रश्न ही नहीं उठता है।

कुज–दोष (या मांगलिक दोष)

वर की कुण्डली में, मंगल लग्न से आठवीं राशि में स्थित है। यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माणकरता है। अगले भाग में इस बात की जांच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की कोई दशा भी विद्यमान है या नहीं।

वधू की कुण्डली में, मंगल लग्न से बारहवीं राशि में स्थित है। यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जांच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की कोई दशा भी विद्यमान है या नहीं।

वर की कुण्डली में, मंगल चंद्र–राशि से आठवीं राशि में स्थित है। यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जांच की जायेगी, कि इस कुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की भी कोई दशा विद्यमान है या नहीं।

वर की कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि से चौथी राशि में स्थित है। उत्तर भारतीय पद्धति के अनुसार, यह कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। अगले भाग में इस बात की जांच की जायेगी, कि इसकुण्डली में इस दोष को निरस्त करने की भी कोई दशा विद्यमान है या नहीं।

कुज–दोष (या मांगलिक दोष) के अपवाद

वर की कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि से चौथे भाव में स्थित है। यह आभासी रूप से कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। लेकिन, चूंकि मंगल अपनी ही राशि में स्थित है, अतः यह एक अपवाद है– जैसाकि यह दोष स्वतः समाप्त हो जाता है। वर की कुण्डली में कुज दोष तकनीकि रूप से अनुपस्थित माना जायेगा।

वर की कुण्डली में, मंगल चर राशि में स्थित है। कुछ लोगों के अनुसार, यह एक अपवाद है, जहां पर कुजदोष को जांचने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। वर मांगलिक दोष से मुक्त है– वह मंगली नहीं है। (हालांकि इस राय को बहुमत प्राप्त नहीं है।)

वर और वधू दोनों की कुण्डलियों में कुज दोष (या मांगलिक दोष) आभासी रूप से उपस्थित है (उत्तर भारतीय पद्धति के अनुसार)। वर के मामले में, कुछ निश्चित परिस्थितियों की उपस्थिति के कारण दोष निरस्त हो जा रहा है, जबकि वधू के मामले में कुछ निश्चित परिस्थितियों की अनुपस्थिति के कारण दोष निरस्त नहीं हो रहा है। अतः तकनीकि रूप से वर मांगलिक नहीं है, जबकि वधू मांगलिक है। अतः इस आधार पर वर को इस वधू से विवाह नहीं करना चाहिए– जब तक कि वधू की कुण्डली में बहुत बली प्रतिकारी प्रभाव मौजूद न हों।

अष्ट कुट मिलान का विश्लेषण

वर्ण कुट का विश्लेषण –

वर का वर्ण वैश्य है और वधू का वर्ण विप्र है। चूंकि वधू का वर्ण उच्च श्रेणी का है, यह गुण मिलान के लिए अनुकूल स्थिति नहीं है, और इस आधार पर वैवाहिक अनुकूलता विद्यमान नहीं है। इस गणना के अनुसार कूट मिलान का प्राप्तांक 0 (पूर्णांक– 1) है।

वि. प्रा.: प्रत्यक्ष रूप से वर और वधू की कुण्डली से वर्ण–कूट मिलान अनुपस्थित है। लेकिन, वधू के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक गणना करने पर, 14 अंक प्राप्त हो रहा है। चूंकि यह अंक 14 से कम नहीं है, इसलिए इस गणना के अनुसार मिलान की अनुपस्थिति को अनदेखा करना उचित होगा।

वश्य कुट का विश्लेषण –

वर का वश्य द्विपद है, जबकि वधू का वश्य जलचर समूह का है। यह गुण मिलान के लिए अनुकूल स्थितिनहीं है, और इस आधार पर वैवाहिक अनुकूलता केवल नाम मात्र ही विद्यमान है। इस गणना के अनुसार कूट मिलान का प्राप्तांक 0.5 (पूर्णांक– 2) है।

तारा (दीन) कुट का विश्लेषण –

वधू के जन्म नक्षत्र से वर के जन्म नक्षत्र तक गणना करने पर 15 संख्या प्राप्त होती है। 9 से विभाजित करने पर इसमें 6 शेष बचता है, यह गुण मिलान के लिए अत्यंत अनुकूल स्थिति है। वर के जन्म नक्षत्र सेवधू के जन्म नक्षत्र तक गणना करने पर 14 संख्या प्राप्त होती है। 9 से विभाजित करने पर इसमें 5 शेषबचता है, यह भी अनुकूल है। अतः दिन (तारा) कूट से इस कुण्डली में वैवाहिक अनुकूलता उपस्थित है। इस गणना के अनुसार कूट मिलान का प्राप्तांक 3 (पूर्णांक– 3) है।

योनि कुट का विश्लेषण –

वर का नक्षत्र महिष (स्त्री) श्रेणी का है, जबकि वधू का नक्षत्र गौ (स्त्री) श्रेणी का है। योनी कूट मिलान केअनुसार, इस योग के लिए 3 प्राप्तांक इस आधार पर प्राप्त हुआ है।

ग्रह मैत्रि कुट का विश्लेषण –

वर का जन्म राशिपति बुध है और वधू का जन्म राशिपति गुरू है। नैसर्गिक संबंध के अनुसार ये दोनों अधिपति ग्रह परस्पर सम हैं। यह सामान्य अनुकूल योग है। जैसाकि यह विशेष कूट युगल जोड़े के मनोवैज्ञानिक स्वभावों को दर्शाता है, इस युगल जोड़े की मानसिक विशेषतायें बहुत अनुकूल होंगी, और उनके मध्य एक दूसरे के प्रति काफी लगाव होगा, जो कि वैवाहिक जीवन की खुशहाली के लिए महत्वपूर्ण कारक है। इस आधार पर, कूट मिलान संख्या में 0.5 अंकों (पूर्णांक–5) का योगदान होगा।

गण कुट का विश्लेषण –

वर का नक्षत्र देव–गण श्रेणी में है, जबकि वधू का नक्षत्र नर–गण श्रेणी में स्थित है। चूंकि वर का संबंध एक ऊँचे या कुलीन वर्ग से है, अतः यह एक अनूकूल योग है, जैसाकि गण व्यक्ति के मिजाज और

रूझान को व्यक्त करता है। वर परिपक्व दृष्टिकोण और धैर्यवान प्रकृति का होगा, उसमें कुछ बहुत वांछित गुण विद्यमान होंगे, जबकि वधू में कुछ सामान्य मानवीय दुर्बलतायें हो सकती हैं। इस गणना के अनुसार कूट मिलान का प्राप्तांक 6 (पूर्णांक–6) है।

राशि कुट का विश्लेषण –

वर की जन्म राशि कन्या है, जबकि वधू की जन्म राशि मीन है, जो कि ठीक इसकी विपरीत राशि है। यहअत्यंत अनूकूल है एवं परस्पर बहुत उत्तम समझ का संकेत है, जो कि वैवाहिक जीवन में खुशहाली सुनिश्चित करने का कारक है। अतः इस आधार पर कूट मिलान का प्राप्तांक 7 है।

नाड़ी कुट का विश्लेषण –

वर की नाड़ी आदि श्रेणी का है, जबकि वधू की नाड़ी मध्य श्रेणी का है। जैसाकि वर और वधू की नाड़ी समान श्रेणी की नहीं है, संकेत लाभदायक हैं। दोनों को विवाह की सलाह दी जा सकती है, यदि कूट मिलान का कुल योग 18 से कम नहीं है। नाड़ा कुट के आधार पर योगदान 8 गुण का है।

वर और वधु की कुण्डलीयों में परस्पर संबंध का आकलन

भावी वर व वधु की जन्मकुण्डलियों में लग्न क्रमशः परस्पर प्रतिकूल केन्द्र भावों में स्थित हैं। संभवतः आप दोनों के मध्य एक दूसरे के प्रति शत्रुता का भाव विद्यमान होगा। आप दोनों के विचारों में भी असमानताएं हो सकती हैं। आप दोनों उत्तम आपसी समझ व सामंजस्य विकसित करने में सक्षम हो सकते हैं। किन्तु यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप दोनों के मध्य बनने वाले रिश्ते दीर्घकालिक नहीं होंगे।

भावी वर–वधु की जन्मकुण्डलियों में राशियां क्रमशः परस्पर अनुकूल सम–सप्तम (विपरीत) भावों में हैं, जबकि आप दोनों विपरीत लिंग के हैं। आप दोनों एक दूसरे से काफी प्रभावित हो सकते हैं अथवा एक दूसरे के प्रति आकर्षित हो सकते हैं। यद्यपि आप दोनों के विचारों में असमानताएं होंगी, तथापि आप दोनों एक दूसरे के विचारों का सम्मान करेंगे। आप दोनों स्वहित की भावना से व्यवहार नहीं करेंगे, इसलिए आपदोनों में निजी हितों को लेकर विवाद होने की संभावना कम है। आप दोनों उत्तम आपसी समझ व सामंजस्य विकसित करने में सक्षम होंगे। यदि आप दोनों का विवाह होता है तो इसके दीर्घकालीक होने की संभावना कम हो सकती है।

भावी वर व वधु की जन्मकुण्डलियों में से एक की जन्मकुण्डली में चंद्रमा जिस केन्द्र राशि में स्थित है, दूसरे की कुण्डली में सूर्य उसी केन्द्र राशि में स्थित है। संभवतः आप दोनों में परस्पर शत्रुता का भाव अत्यधिक होगा। आप दोनों के मध्य (आपके व आपके परिचित के मध्य) श शीघ्र ही किसी प्रकार की गलतफहमी पैदा हो सकती है, जिससे आपके संबंधों में तनाव व कटुता आ जाएगी। संयोग से आप दोनों एक दूसरे से परिचित या मिले हो सकते हैं, किन्तु आप दोनों के संबंधों में अचानक व अप्रत्याशित रूप से दराद पड़ सकती है। आप दोनों में किसी विवाद या झगड़ों के कारण परस्पर सम्मान की भावना पूर्णतः समाप्त हो सकती है तथा आप दोनों को एक दूसरे की मौजूदगी असहनीय व अरूचिकर महसूस हो सकतीहै।

भावी वर व वधु की जन्मकुण्डलियों में से एक की जन्मकुण्डली में चंद्रमा जिस केन्द्र राशि में स्थित है, दूसरे की कुण्डली में शनि उसी केन्द्र राशि में स्थित है। संभवतः आप दोनों में परस्पर शत्रुता का भाव अत्यधिक होगा। आप दोनों के मध्य (आपके व आपके परिचित के मध्य) श शीघ्र ही किसी प्रकार की गलतफहमी पैदा हो सकती है, जिससे आपके संबंधों में तनाव व कटुता आ जाएगी। संयोग से आप दोनों एक दूसरे से परिचित या मिले हो सकते हैं, किन्तु आप दोनों के संबंधों में अचानक व अप्रत्याशित रूप से दराद पड़ सकती है। आप दोनों में किसी विवाद या झगड़ों के कारण परस्पर सम्मान की भावना पूर्णतः समाप्त हो सकती है तथा आप दोनों को एक दूसरे की मौजूदगी असहनीय व अरूचिकर महसूस हो सकतीहै।

भावी वर–वधु की जन्मकुण्डलियों में से एक की जन्मकुण्डली में चंद्रमा जिस राशि में स्थित है, दूसरे की कुण्डली में राहु उसी राशि में स्थित है। अतः इसके प्रभाव से संभवतः आप दोनों में आपसी समझ व सामंजस्य नहीं होगा। शंकालु स्वभाव होने से एक दूसरे का विचार व दृष्टिकोण आपको संशयपूर्ण महसूस हो सकता है। आप दोनों में से एक बहुत चतुर हो सकता है, जबकि दूसरा बहुत उदासीन या चिड़चिड़ा या मिजाजी हो सकता है, किन्तु आप दोनों समान रूप से परिवर्तनशील व अकथनीय हो सकते हैं। आप दोनों के मध्य कभी–कभी कुछ मतभेद व तर्क–विर्तक हो सकते हैं, जिसका आपके संबंध पर कभी–कभी प्रतिकूल प्रभाव भी पड़ सकता है। आप में से कोई एक अचानक दूसरे के साथ निष्ठुरतापूर्वक भावनात्मक रूप से झगड़ा भी कर सकता है।